# संयोजन के सिद्धांत

## संयोजन

संयोजन चित्र अंकित करने में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को ठीक जगह पर बैठाना जोड़ने या मिलाने की प्रक्रिया उनके रूपों को सुसज्जित करना जो कला की दृष्टि से संतोषजनक हो और एक साथ दृष्टिगोचर होने पर सामूहिक रूप से प्रभाव पैदा करें संयोजन कहलाता है स्वर संयोजन सिद्धांत से संगीत लय और चंद की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार चित्रकार रूप रंग के उचित मिश्रण से चित्र को संयोजित करते हैं सरलीकृत सुगम लयबद्ध रेखाओं से रूपचंद उत्पन्न होते हैं इन रूपों को रंग संयोजन, रंग असंगति कोमल कठोर प्रभाव चित्र में चार चाँद लगा देता है रूप गति चित्र और रंग को चित्रकार अपने चित्रफलक में इस प्रकार से जाते हैं कि प्रमुख चित्र या मुख्य कथन की ओर दर्शक का ध्यान शीघ्र ही बिना प्रयास के सहज ढंग से आकर्षित हो जाता है कलागत रूप रंग संयोजन जितना परिपक्व होगा संयोजन उतना ही उच्च कोटि का होगा। मानव स्वभाव से ही सौन्दर्यप्रेमी हैं वह अपने जीवन तथा रहन सहन  और यहाँ तक कि हर क्षण सौंदर्य की तलाश में रहता है वह अपने सौंदर्य बोध के अनुसार अपने को आकर्षक वेशभूषा से सज्जित करता है वहीं अपने घर और परिवेश को सजाकर अपनी सुरुचि का परिचय देता है

सौंदर्य बोध और साज सज्जा का परस्पर गहरा संबंध है साज सज्जा का अर्थ है सजावट यह सजावट ही हमारे सौंदर्य बोध की परिचायक है उदाहरण के लिए हमारे घर के प्रत्येक कमरे में सामान को यथोचित और व्यवस्थित रूप से रखना हमारा सौंदर्यबोध ही है बाहर से आने वाला व्यक्ति हमारे इसी सौंदर्य बोध से प्रभावित होता है यदि कमरे का सामान यथोचित स्थान पर व्यवस्थित ढंग से लगा है उसमें सोफे पर कुशन दीवान पर करीने से लगा मसनद आदि रखा हुआ है तो आगंतुक ना केवल कमरे की साज सज्जा से प्रभावित होता है अपितु वह हमारी सुरुचि की प्रशंसा भी करता है सौंदर्य बोध का यही दृष्टिकोण पृष्ठ सज्जा पर भी लागू होता है जिस प्रकार सुसज्जित घर से आगंतुक प्रभावित होता है ठीक उसी प्रकार पाठक भी पृष्ठ सज्जा से प्रभावित होता है पृष्ठ की साज सज्जा जितनी उत्कृष्ट होगी उसकी गहनता एवं प्रभाविता भी उतनी ही अधिक होगी।

संयोजन का तात्पर्य है दो या दो से अधिक तत्वों की समरसता पूर्ण योजना यही कारण है कि जिस संयोजन में सज्जा के विभिन्न तत्वों का संतुलित एवं समरसतापूर्ण उपयोग नहीं किया जाता वह पाठक पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ता यदि संयोजन के विभिन्न तत्वों, रेखा, रूप, वर्ण, तान, पोत और अंतराल इन तत्वों के अलावा भी कुछ ऐसे सिद्धांत है जो संयोजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं संयोजन चाहे वस्तुनिष्ठ हो अथवा सूचना या

ज्यामितीय संयोजन के सिद्धांत इन्हें समान रूप से प्रभावित करते हैं संयोजन के जो सिद्धांत सज्जा को संतुलित एवं प्रभावी बनाते हैं वे इस प्रकार है

सहयोग

सामंजस्य

संतुलन

प्रभाविता

प्रवाह

प्रमाण

विरोध

## • सहयोग (Unity)

Do all the parts of the composition feel as if they belong together.

सहयोग का अर्थ कला तत्वों के मध्य एकसूत्रता उत्पन्न करना ,जिससे चित्र संयोजन महत्वपूर्ण बन सके और प्रमुख भाव की अभिव्यक्ति हो सके।

सहयोग कलाकृति के सभी तत्वों में एकता समानता और सूत्रता उत्पन्न करता है। सहयोग एकता का मुख्य उद्देश्य चित्र कृति के आकर्षण को बिखरने से बचाना होता है। कलाकृती में प्रयुक्त आकृतियाँ जब किसी व्यवस्थित क्रम में चित्रित की जाती है, तो सहयोग का भाव उत्पन्न होता है यही समुचित व्यवस्था चित्र को महत्वपूर्ण और सरस बनाती है

## •संगति या सामंजस्य (Harmony)

In the painting harmony means impression of unity in all elements of painting such a stone colour texture etc.

चित्र के सभी अंग कलाकृति के अनुरूप मिलते जुलते प्रतीत हो तो सामंजस्य का अनुभव होता है

**सामंजस्य के रूप**

1. **आंतरिक सामंजस्य** की वस्तुओं के आंतरिक भाव तथा विचार से संबंधित आकृतियों के चित्रण से आंतरिक सामंजस्य उत्पन्न होता है

**2, वाह्य सामंजस्य**

चित्र का बाहरी सामंजस्य रेखा रूप रंग तान आदि पर निर्भर करता है

## • संतुलन (Balance)

A distribution of visual weight on either side of the vertical axis.

Symmetrical balance uses the same characteristics.

Asymmetrical uses different but equally weighted features.

संतुलन कला सर्जन का वह सिद्धांत है जिसके अनुसार चित्रकला के समस्त तत्व इस प्रकार व्यवस्थित हूँ कि उनका भार समस्त तल पर समुचित रूप से व्यवस्थित रहें कलाकृति देखने में सुंदर और आकर्षक प्रतीत हो जब हम किसी चित्र को देखते हैं तो हमारी निगाहें सबसे पहले आकर्षण केंद्र पर जाती है और वहीं से

हमारी दृष्टि आगे की ओर चित्र भूमि पर घूम जाती है जिससे दर्शक को गति का आभास होने लगता है चित्र में मुख्य आकर्षण को पकड़ने की सख्ती को ही भार कहा जाता है भार के द्वारा चित्र संकलित किया जाता है

**संतुलन प्राप्त करने के प्रकार**

संतुलन दो प्रकार से प्राप्त कर सकते

1 आकृतियों के सम विन्यास द्वारा

2 आकृतियों के असम विन्यास द्वारा

## 1 सम संतुलन (Formal Balance)

In which both sides of a composition have the same elements in the same position, as in a mirror – image, or the two side of a face .

इसमें समान भार आकर्षण केंद्र से एक समान दूरी पर रहने से ही संतुलित होते हैं इस प्रकार संतुलन बहुत अच्छा नहीं होगा क्योंकि इससे चित्र में गतिशीलता या क्रियाशीलता का बोझ नहीं होता, उसमें आकर्षण कम होता है। इस तरह के संयोजन में दृढ़ता, स्थिरता के भाव अधिक उत्पन्न होते हैं।

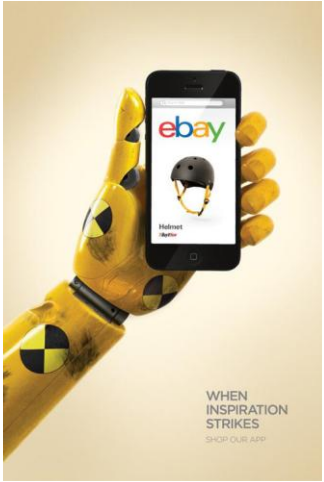


## 2 असम संतुलन (Informal Balance)

In which the composition is balanced due to the contrast of any of the elements of art. For example, a large circle on one side of a composition might be balanced by a small square on the other side.

इसमें भार आकर्षण केंद्र से असमान दूरी पर रहने से संतुलित होते हैं। अधिक भार यानी बड़ी आकृति केंद्र से दूर और कम भार यानी छोटी आकृति केंद्र से निकट स्थित होने से चित्र में गतिशीलता बढ़ती है और आकर्षण बढ़ता है। आधुनिक कलाओं में इनका

उपयोग अधिक होता है चंचल, गतिशील और आक्रोश के भावों को असंतुलन के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया जाता है।

## • प्रभाविता (Dominance of Emphasis)

used to make certain parts of an artwork stand out. It creates the center of interest or focal point. It is the place in which an artist draws your eye to first.

कलाकृति के सृजन में प्रभाविता प्रमुख एवं अनिवार्य सिद्धांत है किसी भी चित्र की भाव अभिव्यक्ति में मुख्य आकृति या वस्तु को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है जहाँ दर्शक की सर्वप्रथम दृष्टि पड़ती है और वहीं से आगे की ओर अन्य गौण वस्तुओं पर जाती है संयोजन के सिद्धांतों में प्रभाविता की अनुपस्थिति में कलाकृति दर्शकों आनंद नहीं देती है चित्र में आकर्षण प्रभाविता से ही उत्पन्न होता है और सौंदर्य के लिए यह अति आवश्यक और अनिवार्य है

प्रभाविता के तीन प्रमुख कार्य होते हैं

1. प्रमुख भाव या विचार को अभिव्यक्ति करने वाली आकृति अवश्य को सबसे अधिक महत्त्व प्रदान करना।
2. चित्र में एक रूपता को बंद कर सौंदर्य के अवसर प्रदान करना।
3. चित्र में गौण आकृतियों में सरलता एवं सहजता उत्पन्न करना।

- ## प्रवाह (Rhythm)

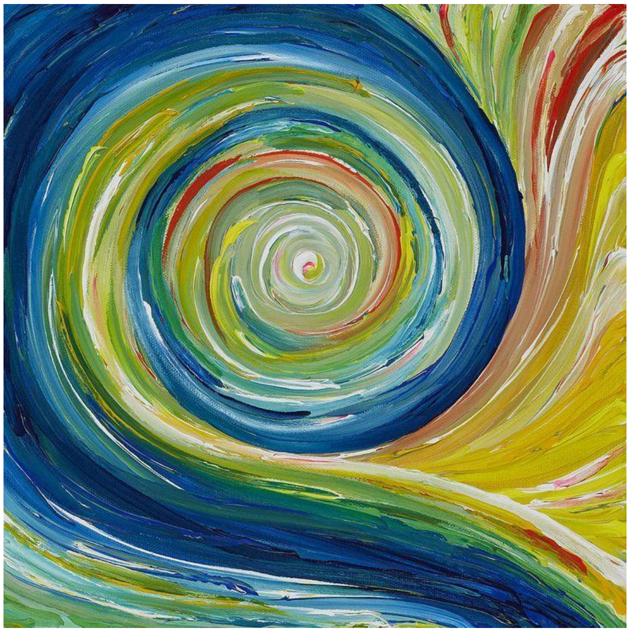

How the eye moves through the composition; leading the attention of the viewer from one aspect of the work to another. Can create the illusion of action.

प्रवाह या लय गति का आधार है इस प्रकार लय का अंर्थ हुआ समान तत्व की पुनरावृत्ति से उत्पन्न निरंतरता। चित्र में रेखा तान रंग आदि तत्व मिलकर उत्पन्न करते हैं चित्र में इसके प्रयोग से सौंदर्य मधुरता और सरसता उत्पन्न होती है जब तक चित्र भूमि पर कुछ अंकित नहीं करते हैं वह अक्षत यानी शांत रहती है जैसे ही चित्र भूमि पर बिंदु या रेखा का निर्माण करेंगे चित्र भूमि में गतिशीलता पैदा हो जाएगी और एक संबघ आवृत्ति में पथ का निर्माण हो जाता है और द्रष्टि आगे की ओर उसी दिशा में घूमने लगती है इससे दर्शक को गति की अनुभूति होती है

- ## अनुपात या प्रमाण (Proportion)

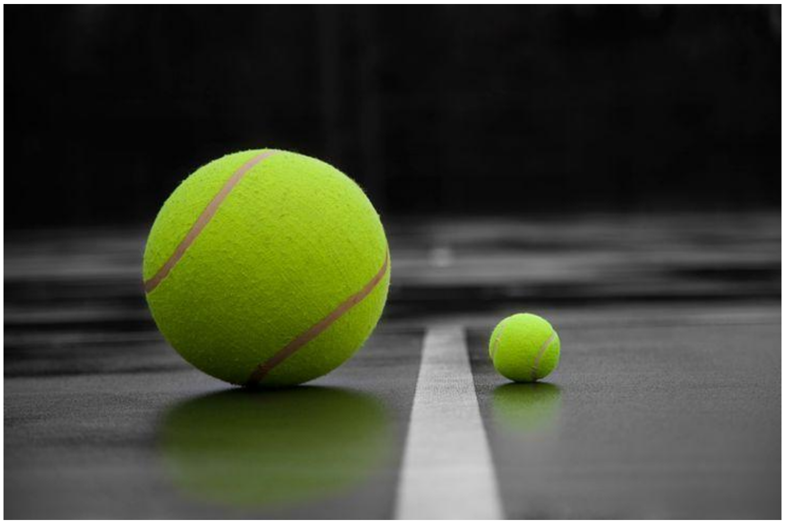

How things fit together and relate to each other in terms of size and scale; whether big or small, nearby or distant.

कला में अनुपात का आशय आकृतियों तथा चित्र फलक की लंबाई और चौड़ाई का परस्पर अनुपातिक संबंध आकृतियों का अपना प्रमाण या अनुपात होता है और सभी में एक दूसरे से संबंध होता है जो रचना में यह आवश्यक हो जाता है कि आकृतियों का संबंध तान रंग इत्यादि का चित्र भूमि से संबंध हो । चित्र में प्रयुक्त आकृति को कितना बड़ा या छोटा बनाया जाए और इसे चित्रफलक में किसी स्थान पर अंकित किया जाए इसका समुचित ज्ञान

अनुपात के अंतर्गत करते हैं जो अनुपात रुचिकर तथा सुंदर लगे वही अच्छा अनुपात है। जो आदर्श अनुपात आकृति निर्माण के चले आ रहे हैं वह आदर्श आकृति निर्माण के लिए श्रेष्ठ है जैसे पुरुषाकृति के लिए उसके सिर का 8 गुना लंबाई और स्त्री आकृति के लिए उसके सिर का 7 $\frac{1}{2}$गुना लंबाई होना चाहिए

## • विरोध (Contrast)

The arrangement of opposite elements(Light vs. Dark, Rough vs. Smooth, Small vs. Large , etc...) in a composition so as to create visual intrest.

चित्र में एकरसता को भंग करने के लिए विरोध दिखलाना आवश्यक होता है विरोधी तत्वों के प्रयोग से कलाकृति में तेज शक्ति गति आकर्षण तथा सौंदर्य उत्पन्न होते हैं अत: चित्र में अन्य कला तत्व के होते हुए विरोधी तत्व को अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

विरोध केवल चित्र को आकर्षक प्रभावशाली और चमकीला बनाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है यह निम्न प्रकार से उत्पन्न किया जाता है।

**विरोध के प्रकार –**

**1 रेखा विरोध**

चित्र में रेखाओं के साथ तिरछी रेखाओं के प्रयोग से रेखा विरोध उत्पन्न होता है।

**2 दिशा विरोध**

चित्र में प्रयुक्त मुख्य आकृति के विरोध में दूसरी आकृति को चित्रित करने से दिशा विरोध उत्पन्न होगा।

**3 रंग विरोध**

सहयोगी रंग के साथ विरोधी रंग के प्रयोग से रंग विरोध उत्पन्न होगा जैसे लाल रंग के साथ दूसरे रंग का प्रयोग रंग विरोध उत्पन्न करेगा।

**4 बल विरोध**

रंगों के हल्के या गहरे रंगों के प्रयोग से चित्र में बल विरोध उत्पन्न होता है।

**5 धरातली विरोध**

वस्तुओं के प्रति प्रस्तुतीकरण में किसी वस्तु का धरातल चिकना और दूसरी वस्तु का खुदरा चित्रित करने से दोनों वस्तुओं के प्रभाव उत्पन्न करने में वृद्धि होती है।